प्रातः क्लास 25/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। यह रूहानी बच्चों को क्या सिखाया। यह तो रूहानी बच्चे जानते हैं रूहानी बाप परमधाम से आकर हमको पढ़ा रहे हैं। क्या पढ़ा रहे हैं, बाप के साथ आत्मा का योग लगाना सिखलाते हैं। जिसको याद की यात्रा कहा जाता है। यह भी बताया है बाप को याद करते2 मीठे2 रूहानी बच्चे तुम पवित्र बन अपने पवित्र शान्तिधाम में जा पहुँचेंगे। कितनी सहज समझानी है। अपन को आत्मा समझो और प्रियतम बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्म–जन्मान्तर के पाप हैं वह भस्म होते जावेंगे। इसको ही यो–अग्नि कहा जाता है। प्राचीन भारत की योग अग्नि। जो बाप ही हर 5000 वर्ष बाद आकर समझाते हैं। बेहद का बाप ही आकर भारत में इस साधारण तन में तुम बच्चों को समझाते हैं। इस याद से ही तुम बच्चों के जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे; क्योंकि बाप पतित–पावन सर्वशक्तिवान है। तुम्हारी आत्मा की बैटरी अभी तमोप्रधान हो गई है। जो सतोप्रधान थी। फिर अभी उनको सतोप्रधान कैसे बनावे जो तुम सतोप्रधान दुनिया में जा सको वाया शान्तिधाम। बच्चों को यह बहुत अच्छी रीति याद रखना है। बाप बच्चों को ही डोज देते हैं। यह याद की यात्रा उठते–बैठते चलते–फिरते तुम कर सकते हो। जितना हो सके गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान पवित्र रहना है। बाप को याद भी करना है। और साथ2 दैवीगुण भी धारण करनी है; क्योंकि दुनिया के आसुरी कैरेक्टर्स हैं। तुम बच्चे यहाँ आये हो दैवी कैरेक्टर्स बनाने। जानते हो इन ल0ना0 के कैरेक्टर्स बहुत ही मीठे थे। भक्तिमार्ग में इन्हों की ही महिमा गाते आये हैं। भक्तिमार्ग कब से शुरू हुआ यह भी किसको पता नहीं। अभी तुमने समझा है। और रावण राज्य भी कब से शुरू हुआ यह भी अभी समझा है। तुम बच्चों को यह सारी नालेज बुद्धि में रखनी चाहिए। जब कि जानते हो हम ज्ञान सागर रूहानी बाप के बच्चे हैं। अभी रूहानी बाप हमको पढ़ाने आये हैं। यह भी जानते हो यह कोई साधारण बाप नहीं है। यह है रूहानी सभी आत्माओं का बाप। उनका निवास स्थान सदैव ब्रह्मलोक में है। लौकिक बाप तो सभी के यहाँ ही रहते हैं। यह बच्चों को अच्छी रीत निश्चय में रखना है। हम आत्माओं को पढ़ाने वाला परमपिता परमात्मा है जो बेहद का बाप है। भक्तिमार्ग में लौकिक बाप के होते भी पारलौकिक बाप को बुलाते हैं। उनका एक ही यर्थात् नाम शिव है। बाप खुद ही समझाते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों मेरा नाम एक ही शिव है। भल अनेक नाम सुन अनेक मंदिर बनाये हैं; परन्तु वह सभी है भक्तिमार्ग की सामग्री। यथार्थ नाम एक ही शिव है। तुम बच्चों को आत्मा ही कहते हैं। शालीग्राम कहे तो भी हर्जा नहीं है। शिव एक ही है वह है बेहद का बाप। बाकी सभी हैं बच्चे। इनके पहले तुम हद के बच्चे हद के बाप के पास आते थे। ज्ञान तो था नहीं। बाकी अनेक प्रकार की भक्ति तुम करते आये हो। आधा कल्प भक्ति की है। द्वापर से लेकर भक्ति शुरू हुई है। रावण राज्य भी शुरू हुआ है। यह है बहुत सहज बात; परन्तु पत्थर बुद्धि होने कारण इतनी सहज बात भी मुश्किल कोई समझते हैं। रावण राज्य कब शुरू हुआ, राम–राज्य कब शुरू होता, यह भी दुनिया में कोई नहीं जानता है। तुम मीठे2 बच्चे जानते हो बाप ही ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर, जो उनके पास है वह आकर बच्चों को देते हैं। शास्त्र तो है भक्तिमार्ग का ज्ञान। अभी तुम समझ गये हो ज्ञान भक्ति और फिर है वैराग्य। यह तीन मुख्य है। सन्यासी लोग भी जानते हैं ज्ञान भक्ति वैराग्य; परन्तु सन्यासियों का है अपना हद का वैराग्य। वह बेहद का वैराग्य सिखला न सके। दो प्रकार के वैराग्य हैं। एक है हद का दूसरा है बेहद का। वह है हठयोगी सन्यासियों का वैराग्य। यह है बेहद का। तुम्हारा है राजयोग। वह घर–बार छोड़ जंगल में चले जाते हैं तो उन्हों का नाम ही पड़ जाता है सन्यासी। हठयोगी। घर–बार छोड़ चले जाते हैं पवित्र रहने लिए। यह भी है अच्छा। बाप समझाते हैं भारत तो बहुत पवित्र था। इतना पवित्र खण्ड और कोई होता ही नहीं। भारत की तो बहुत ऊँची महिमा है। जो भारतवासी खुद नहीं जानते। बाप तो भूलने कारण सभी कुछ भूल जाते हैं अर्थात् नास्तिक निर्धणके बन जाते हैं। सतयुग में कितना सुख–शांति था। अभी कितना अशान्ति, दुख है। और वह है मूलवतन शान्तिधाम जहाँ कि हम आत्माएँ रहती हैं। हम

आत्माएँ अपने घर से यहाँ आती हैं बेहद का पार्ट बजाने। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। जबकि बेहद का बाप आते हैं नई दुनिया में ले चलने के लिए। बाप आकर उत्तम से उत्तम बनाते हैं। ऊँच ते ऊँच भगवान को कहा जाता है; परन्तु वह कौन है, किसको कहा जाता है यह कुछ भी नहीं समझते हैं। एक बड़ा लिंग रख दिया है। समझते हैं यह निराकार परमात्मा है। हम आत्माओं का वह बाप है यह भी नहीं समझते। पूजा करते हैं, हमे.... शिवबाबा, शिवबाबा कहते हैं। रूद्र बाबा वा बबुरनाथ बाबा नहीं कहेंगे। तुम लिखते भी हो शिवबाबा याद है? यह स्लोगन तो घर2 में लगानी चाहिए। शिवबाबा को याद करो तो पाप भस्म होंगे; क्योंकि पतित–पावन एक ही बाप है। इस पतित दुनिया में तो एक भी पावन हो नहीं सकता। शास्त्रों में तो सभी जगह पतित लिख दिया है। त्रेता में भी कहते हैं कि रावण था। सीता चुराई गई। कृष्ण के साथ कंस, जरासंधी, हिरण्यकिश्यप आदि थे। कृष्ण पर कलंक लगाई है। अभी सतयुग में यह सब हो कैसे सकता। बाप पर भी कलंक लगाये हैं। तो देवताओं पर भी कलंक लगाये हैं। सभी की ग्लानि करते रहते। तो अब बाप कहते हैं यह याद की यात्रा है आत्माओं को पवित्र बनाने की। पावन बन फिर पावन दुनिया में जाना है। बाप 84 का चक्र भी समझाते हैं। अभी तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। फिर घर जाना है। घर में शरीर तो नहीं जावेंगे। सभी आत्माएँ जानी हैं। इसलिए मीठे2 बच्चों अपन को आत्मा समझ बैठो। और सतसंगों में तुम देह–अभिमानी हो बैठते हो। यहाँ बाप कहते हैं देही–अभिमानी होकर बैठो। जैसे मेरे में यह संस्कार है मैं ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शान्ति का सागर हूँ। तुम बच्चों को भी बनना है। बेहद के बाप और हद के बाप का फर्क भी बताना है। बेहद का बाप बैठ तुमको सारा नॉलेज समझाते हैं। आगे नहीं जानते थे। अभी सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, उनके आदि,मध्य,अन्त को और फिर चक्र की आयु कितनी है सभी बतलाते हैं। भक्तिमार्ग में तुमको सभी उल्टा बतलाया गया है। कल्प की आयु लाखों वर्ष सुनाकर तुमको घोर–अंधियारा में डाल दिया है। भक्ति को कहा ही जाता है अज्ञान मार्ग। दुर्गति मार्ग। नीचे ही उतरते आये हैं। कहते भी हैं जितना हम भक्ति करेंगे उतना ही बाप को नीचे खैंचेंगे। बाप आकर हमको पावन बनावेंगे। बाप को खैंचते हैं; क्योंकि हम पतित हैं। बड़ी दुखी बन जाते हैं। फिर कहते हैं हम बाप को बुलाते हैं। बाप भी देखते हैं बिल्कुल दुखी तमोप्रधान बन गये हैं, 5000 वर्ष भी पूरे हुए हैं तब फिर आते हैं। यह पढ़ाई कोई इस पुरानी दुनिया के लिए नहीं है। तुम्हारी आत्मा धारण कर साथ ले जावेगी। जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ तुम भी ज्ञान नदियाँ हो। यह नॉलेज कोई इस दुनिया के नहीं है। यह तो है छी2 दुनिया। छी2 शरीर है। इनको तो छोड़ना है। शरीर तो यहाँ पवित्र हो नहीं सकता। मैं आत्माओं का बाप हूँ। आत्माओं को ही पवित्र बनाने आया हूँ। इन बातों को मनुष्य तो कुछ भी नहीं समझते हैं। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। पतित हैं। इसलिए गाते हैं पतित–पावन.....आत्मा ही पतित बनी है। आत्मा ही सभी कुछ करती है। भक्ति भी आत्मा ही करती है। शरीर भी आत्मा लेती है। अभी बाप कहते हैं मैं तुम आत्माओं को ले जाने आया हूँ। मैं बेहद का बाप तुम आत्माओं के बुलावे पर आया हूँ। तुमने कितना पुकारा है। अभी तक भी बुलाते रहते हैं। हे पतित–पावन आओ। ओ गाड फादर आकर इस पुरानी दुनिया के दुखों से, डेबिलराज्य से लिबरेट करो। तो हम सभी हेविन में चले जावेंगे। और तो कोई को पता ही नहीं है। हमारा घर कहाँ है। घर में कैसे, कब जावेंगे। मुक्ति में जाने लिए कितना माथा मारते हैं। कितने गुरु करते हैं। जन्म–जन्मान्तर माथा मारते आये हैं। वह गुरुलोग जीवनमुक्ति के सुख को तो जानते ही नहीं। वह चाहते हैं मुक्ति। कहते भी हैं विश्व में शान्ति कैसे हो। सन्यासी भी मुक्ति को ही जानते होंगे। जीवनमुक्ति को जानते ही नहीं; परन्तु मुक्ति–जीवनमुक्ति दोनों का वरसा बेहद के बाप से मिलता है। तुम जीवनमुक्ति में रहते हो तो बाकी सभी मुक्ति में चले जाते हैं। अभी तुम बच्चे नॉलेज ले रहे हो यह बनने लिए। तुमने ही सबसे जास्ती सुख देखा है। फिर सबसे जास्ती दुख भी तुमने देखा है। आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले तुम ही फिर धर्म भ्रष्ट–कर्म भ्रष्ट हो गये हो। तुम पवित्र प्रवृत्तिमार्ग में थे। यह ल0ना0 पवित्र प्रवृत्ति मार्ग के हैं ना। घर–बार छोड़ना यह सन्यासियों का धर्म है। सन्यासी भी पहले अच्छे थे। अभी तमोप्रधान बने हैं।

तुम भी पहले बहुत अच्छे थे। अभी तमोप्रधान बने हो। बाप समझाते हैं यह ड्रामा का खेल है। बाप समझाते हैं तुमको जिन्होंने ऑरफन बनाया उनको फिर तुम पूजने लग पड़े हो। समझते नहीं यह विधवा बनाने वाला हमको क्या देंगे। है तो सारा ड्रामा; परन्तु बाप तुम बच्चों को भूलों की समझानी देते हैं। वह ऑरफन निर्धण का बनाकर गये उनको फिर तुम गुरु बनाते हो। उनको भगवान भी समझते हो गुरु भी समझते हो। सन्यासियों का तो धर्म ही अलग है। वह पहले अपने धर्म में सतोप्रधान थे फिर वह भी गिरते2 तमोप्रधान बन गये हैं। नहीं तो पहले सिर्फ भिक्षा लेकर जाते थे। कभी देखते नहीं थे। अभी वही आत्माएँ उनकी चरण धोकर अमृत समझ पीती हैं। तो यह पढ़ाई है ही नई दुनिया के लिए। बाप कहते हैं पतित दुनिया में, पतित शरीर में ड्रामा अनुसार हमको हर 5000 वर्ष बाद आना पड़ता है। न कल्प लाखों वर्ष का है, न मैं सर्वव्यापी हूँ। यह तुम अपकार, मेरी ग्लानि करते आये हो। मैं फिर भी तुम पर कितना उपकार करता हूँ। जितना शिवबाबा की ग्लानि की है और औरों की नहीं की है। जो बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। उनके लिए तुम कहते रहते कि सर्वव्यापी है। कुत्ते–बिल्ले, ठिक्कर–भित्तर में है। जब ग्लानि की (भी) हद हो जाती है तब मैं फिर आकर उपकार करता हूँ। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। कल्याणकारी युग जबकि तुमको पवित्र बनाने आया हूँ। कितना सहज युक्ति पावन बनने की बतलाते हैं। तुमने भक्तिमार्ग में तो बहुत ही धक्के खाये हैं। तालाब में भी स्नान करने जाते हैं। समझते हैं इससे पावन बन जावेंगे। अभी कहाँ वही पानी, कहाँ पतित–पावन बाप। वह है सब भक्तिमार्ग। यह है ज्ञान। मनुष्य कितने घोर–अंधियारे में हैं। कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। यह तो तुम जानते हो गाया भी जाता है विनाश काला विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। अभी तुम्हारी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार प्रीत बुद्धि है। पूरी नहीं है; क्योंकि माया घड़ी2 भुला देती है। यह है 5 विकारों की लड़ाई। 5 विकारों को रावण कहा जाता है। रावण पर गदहे का सिर दिखाते हैं। मनुष्य भी जैसे ट(ट्)टू बुद्धि बन जाते हैं। इस पर एक कहावत भी है तुम हो काजी, वह है ट(ट्)टू । कितना भी माथा मारो इशारा से समझते ही नहीं। इसलिए यह रावण पर निशानी है गदहे की।

बाप ने यह भी बतलाया है स्कूल में कब आँखें बन्द कर नहीं बैठना होता है। वह तो भक्तिमार्ग में भगवान को याद करने की शिक्षा देते हैं कि आँखें बन्द कर बैठो। यहाँ तो बाप कहते हैं यह स्कूल है। जो आँखें बन्दकर बैठते हैं उनको तो अंधे के औलाद अंधे कहा जाता है। सुना भी है नज़र से निहाल प्रभु किंदा सद्गुरु। कहते हैं यह जादूगर है। अरे वह तो गायन भी है नजर से निहाल देवताएँ ही होते हैं। नजर से मनुष्य को देवता बनाने वाला जादू(गर) हुआ ना। बाप बैठ बैटरी चार्ज करे और बच्चे आँखें बन्द कर बैठें तो क्या कहेंगे। स्कूल में आँखें बन्द कर नहीं बैठते, पिनकी नहीं आती है–कब उबासी नहीं देंगे। पढ़ाई तो है सोर्स ऑफ इनकम। लाखों, पदमों की कमाई है। यहाँ तो आत्माओं को सुधारना होता है। यह एम–ऑबजेक्ट खड़ी है। इन्हों की राजधानी देखनी हो तो जाओ दिलवाला मंदिर। वह है जड़ यह है चैतन्य। देवताएँ भी हैं स्वर्ग भी है। सर्व का सद्गति दाता आबू में ही आते हैं। इसलिए यह बड़े ते बड़ा तीर्थ आबू ही ठहरा। जो भी धर्मस्थापक अथवा गुरु लोग हैं सभी की सद्गति बाप ही आकर करते हैं। यह सबसे बड़ा तीर्थ है; परन्तु गुप्त है। इनको कोई जानते ही नहीं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

डायरेक्शन :– बाप–दादा कहे सीढ़ी के चित्र एक एक रुपये में खलास करते जाओ; क्योंकि कागज सड़ा हुआ है। रखने से खराब हो जावेगा।

–: अपन को आत्मा समझ बाप की याद में हो? बेहद के बाप का बेहद का वरसा याद है? :– – : शिवबाबा याद है? : –